

मराठी

क्र. नं. २०

४९०/५८२

कथा

यान

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळे.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ४९०/५८२ (५४३)

ग्रंथ नाव भात.

विषय कथा-पुराणे.

1194

1191



॥ श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वतीये नमः श्री गुरुभ्यो नमः धर्मप्रदो सर्व
 ह्यमुर्ती ॥ पतीव्रता जा. लोयावहती ॥ धामाभी द्रोघदीचेपंती
 तुलेहसी जा. एपा ॥ १९ ॥ रूपवती गुरुवंतः स्वतारसेवसी दोसनीरत
 तेजायं रिपे मुर्तीमंत ॥ मेहासीची जा. एपा ॥ २० ॥ चीरं जीवपा
 वानीप्रेमा ॥ चीरं जीवरायाद्यमी ॥ पतीव्रतेचा आगाद्यमहीम
 नारीपीन आवचारी ॥ मंदूरी नरेंदोतमः आस्थपतीहेपवी
 व्रनामा ॥ गजायाहीपीतीवर्वसीकरनीराहीजा ॥ २१ ॥
 जातेंद्रीयमदाचारी ॥ ससवादीपरोपकारी ॥ चतुर्थाज्या
 आंतरी ॥ वृतीवंतवसहसरे ॥ २२ ॥ तया नीहीपुत्रसंतान ॥
 चींतउधरेव्यापीन्धेमन ॥ सा बीचीचे आराधनः तपोच

११०५

२६

हा

२४

कीम। डीले ॥ ६ ॥ रा। रा। नृ। ज। परमर ए। ॥ नृ। नृ। तु। रा। व्यवा
 नीः स्वपु। र। रा। ए। मदीनी ॥ ७ ॥ नृ। नृ। दृ। नृ। पृ। लृ। म। वृ। ॥ ७ ॥ आ। हृ।
 दृ। वृ। रृ। श। वरीत पृ। य। किरीता ये। री ॥ प्र। स। नृ। स। वी। वी। सृ। दृ। रीः
 होती जा। ली। नृ। प। ति ॥ ८ ॥ दृ। पे। ने। आव। लो। को। नी। रा। जा। मृ। ले। ते। म।
 डी। ले। क। वं। ए। था। क। जा। वृ। वृ। श। क। मं। ने। क। म। लृ। शाः वे। धृ। लृ। ग। लृ।
 सा। ग। पां ॥ ९ ॥ रा। ज। मृ। ए। वे। दृ। मं। तं। स। त। ती। नृ। दृ। पा। सी। री। ते ॥ ये। वृ।
 शृ। त। पु। त्र। दे। ई। मा। ते ॥ वं। शृ। वृ। दृ। ॥ १० ॥ बो। ले। सा। बी। री। सृ। रा। बीः
 ने। मं। ने। मो। नि। गे। ला। बी। ची। पु। वृ। सं। ता। नृ। तं। वृ। प्रा। रृ। धी ॥ ये। ए। मृ। ली। ही। से। ना ॥ ११
 लृ। क्षु। मी। स। मा। नृ। गु। ए। वे। नृ। ली ॥ कृ। न्या। नृ। त। सी। ये। ए। क। ली ॥ जी। चे। अ। रृ। ध्या
 नृ। च। मं। उ। ली। वा। स्वा। ए। ती। रृ। धी। मुखं ॥ १२ ॥ ऐ। से। बो। लो। नी। रा। या। प्र। ती ॥ आ
 वृ। शृ। य। सा। बी। री। नृ। ग। वं। ती ॥ सं। तो। शा। आ। सं। तो। ची। ती ॥ जा। कृ। ली। रा। या। ते ॥ १३

ॐ स्वप्नकाले हो स्व गन्तौ ॥ होती जन्ती राज वल्लुना ॥ कन्या जन्ती जे
सी अन्ना न्नास्करा ची सुते ज्या ॥ १९८ ॥ जात कर्म नाम कर्म ॥ करीता
जान्ना नृ पसतम ॥ कन्या येतां ओ स्व र्यद्रम ॥ दीवसें दीवसा क्वा ठुन्ना ॥ १९९ ॥
सावीत्री ने हेल् न्ना मः दीधने मूणे नीजे न कोतम ॥ सावीत्री चे ठे वोनीना
म ॥ स्नेह आनंदे पाहीत ॥ १९९ ॥ वयेन प्रथं दिखोनी कुमरी ॥ पीतावर की
च्यार करी ॥ ईसमने लसवो परि ॥ हे मंगुणे दीसेना ॥ १९९ ॥ पीत मृशे च्या
तुर्य खाणी ॥ मुखी शोच बीगु हासा जे ॥ पु रु र ह्ना आपु न्ना नयती ॥ प
परीक्षोनी आशावा ॥ १९९ ॥ आ ॥ १९९ ॥ सीबी कासनी ॥ ब्रध पुरो हीत प्रध
न गुणी ॥ सवेद्ये उ नीते सुजा एणी ॥ छप ब्रदेश शोचिन्तो ॥ १९९ ॥ दुमछे
नरा जे श्वर ॥ ससवान्त याचि कुमर ॥ मदी जावे तो चतरा येती जा
नी स्वदेश ॥ २०० ॥ आ ॥ स्वपती आपु न्ना सदनी ॥ तव जे दीस पातन्ना

॥ १९९ ॥

38

ज

ते

नारदमुनी वैसुनीकनक। सनी॥ सर्वोपचारे पुजीन्त॥ २१॥ इह
देखो नीचपामजा॥ रबीमृ एमाराजा॥ आहं सदीसेवीवाहका
जा॥ तेंकारं मसामे॥ २२॥ रा। जाभू ऐच्यतु तुरस्वरी॥ स्थयेगेन्त
सेवरवीच्यारी॥ आलीयावतां तवीसारी॥ कहन्त॥ ना ही आमुते॥ २३॥
स्थयेवीच्यारी वीधीनंदन॥ करपाहीन्त॥ आसेकवण॥ तेमृ एपवीत्र
ससवान॥ दुमछेन आहता॥ २४॥ तोयेकमानन्ता मासीयाचीता
तवंचकाले ब्राह्मणेवार्ता॥ आणला मृ एनीते आनर्थ॥ माजीपडी
लान्ठपवस॥ २५॥ प्रथमंगेलेतयाचनमन॥ आंचबहूनीनदेसुनीनय
न॥ स्पष्टादायादमीहोन॥ राज्याचहीरतीन्ते॥ २६॥ आंचकसेमृ
त्रगुणीजायसिहीत दवउलीवनी॥ कंदमूलफलासनी॥ बक्ष्ययाये
वसतसे॥ २७॥ हेहेकुनीदुष्टीतवार्ता॥ कथ्यन्त॥ गीप्रबोधीपीता॥ सस

वानसजुनीचितावर आणीक वीच्याही ॥ ४० ॥ येरीस एजीन घडे
 येकदा वेरील्ल सोमानसे ॥ तेमन आणीक तेस्ये ॥ तोवीची च्या रस्य
 मी ॥ ४१ ॥ आज्ञायता ग्याची आज्ञा ॥ येतीजाती आपुन्याहे ॥ नीश्र
 याचेद्येवमाचहे ॥ यहु सर्वयानपवो ॥ ४२ ॥ नारद म्हणेवोगुणवते ॥
 आणीक येकदाश्याते ॥ तोमंजवीरा आणीकते ॥ ज्ञानवाहीजा
 पां ॥ ४३ ॥ राजा म्हणेवोमुनीनि ॥ प्रगटकरोनीसागीजेआम
 गुढहेतुनीमाहात्म्यमा ॥ माजीविप्रलीस्यामीयां ॥ ४४ ॥ नारदवेळे
 ससोतर ॥ लोटल्या येकसंबधर ॥ मृसपवेन्धपाहीवर ॥ हा
 नीचाद्विरजाएपां ॥ ४५ ॥ येरीम्हणेमीपेतीवता ॥ जीणेनारीनस
 ताचता ॥ आज्ञाअथवतर ॥ ४६ ॥ मरणादीवसमारीस्वा ॥ ४७

(५४)

मपेने अवलोकुनि श्री हरि॥ तरि अ विवेकाचा विवेक करि
सुख त असलिया आपुला पदरि॥ सर्वा रिष्टं नाशति॥ ३५॥
निश्चय देखुनि अंतरि॥ नारद स्वरो धन्य कुमारि॥ सत्य वा
नातें चि वारि॥ सर्व कल्याण करि तां॥ ३६॥ मरण पावो तस्मा
विक॥ अथवा वांचो कल्याण॥ सत्य वा ना विना आशी क
वर ने लोहि सर्वथा॥ ३७॥ जाणुनि कन्येचा भावार्थ॥ घेंउ
नि सामगि समस्त॥ वन पावला नृप नाथ॥ दुमछे ना ज
व विक्रे॥ ३८॥ तो दारिद्र्य भुत माध्या सनि॥ शाल वृक्ष पण

सनि॥ वल्कलवासचृणसनि॥ वसे दारापुत्रेसि॥ ३९॥ दुम
छेन करिवि नति॥ नगरदेसिराज्यसंपत्ति॥ वैरिंहिरोनिव
नाप्रति॥ दरिद्रवानेद्वडिले॥ ४०॥ दृष्टिजावोनिजालोंअं
ध॥ अवलक्ष्मिनेकेलेमंदा॥ मुक्कफळजळकंदा॥ सेउनि
काळकंठितसों॥ ४१॥ आपलासमानपाहुनिराजा॥ याचदि
वोपिसगुणात्मजा॥ मातेदेखानिभावतुसा॥ विदुतिनपव
कैसेनि॥ ४२॥ अश्वपतिप्रार्थिवोसाचार॥ सप्तवानावां
पुनिवर॥ कन्यानकरिनिधरि॥ निश्चयेसिंजाणापा॥ ४३॥

(58)

बोपुनीसंपदकोटीवश॥ मयवानदीवन्नीकुमरी॥ कन्यछिउनीवनगंहरी
नाजानगरपातन्त्रा॥ ४४॥ तीनेसागोनवरुनरले॥ घरीतीजान्नी
बलकन्वसे॥ ताउपवस्येतवर्ले॥ प्रीतीकलीसुदन्ती॥ ४५॥ मासुसासरा
चीसुश्रुता॥ रश्मिरासमानमानोपरशा॥ कुरुवामाजीआनारीसा
बीरुमचावदावीना॥ ४६॥ दशदीपसाचसमाधान॥ अवध्यापाठी
करीशयनसकालाआधीउठअपरा॥ उरुकाळीवहेश॥ ४७॥ प्र
तारवीरुच्येअवेशतेहीअसरासर्वैसामानुनीअनेदनावः
संतोशकवीपुरशते॥ ४८॥ ब्रह्मछिउनीब्रह्मनावनादेवदेवी
पीजाला॥ वरीशुकरिन्नजना॥ ब्रह्मचावोजापरी॥ ४९॥ नीशासरे
तवनरपाथीवि॥ करीपुरशाचीसवा॥ दुखीनांहीदरीदनावा॥ सेवासु
खसंतुल्य॥ ५०॥

(6) नारदेसागीतन्त्र। ओदीवस॥ तोलेखिता आलामसमासगचवरीरात्री
चा आवकाश॥ उरन्तामुसकाहते॥ ७९॥ तीन दीवस उपोश ए॥ नेदेष
ह मुहनाजीवन॥ श्वसुरमूरोनी वरिण॥ नवरीमातेस वद्या ॥ ८०॥ मूरो हो
तो आस्तमाना॥ फलें नहीन तुमची आज्ञा॥ हे अंक नीससुवाना॥ पर
मप्रीत प्रीयेची॥ ८१॥ फरश चवोनी पाहती॥ फलें छापावयाचे आ
ती॥ नीधता जाल्लवनती॥ जाय वारी आगुहे॥ ८२॥ नार्कोनी
तीच्यावचना॥ फलन्त॥ गीनी पाहना॥ सवे चल्लीन्नी पवीत्रांगना
पतीमरणस्मारीनी॥ ८३॥ दोधी आर नवरीतावनी॥ आसुत फलें रे
खीन्नी नयनी॥ जायचि मकारीन्नी मनी॥ पुन सुचल्ला मूरोनी ॥ ८४॥
पलं द्रोएन्नरीन्ना फली॥ तव आस्तमाना पातन्ना रेही॥ प्रीया प्रा
र्थति येवेही॥ मूरो जावैस्थान्मा ॥ ८५॥ काव्यमोडीत आगुहेही॥

(6A)

दण्डावाजी नलान्नन्नाय ॥ मुष्ठीरादुनी प्रुथीतदी ~~देउ~~
प्रायेप दुउन्ना ॥ ५० ॥ नार्यामस्तव चरोनी आंकी ॥ हृदयपीटी
मुदहस्तकी ॥ नीशी प्रमाशद्य टीकान्तेरवी ॥ तवयेकप्रतरन्ना ॥ ५१ ॥
स्वीसमरवीनेदन ॥ वासवेदील आरतवर्ण ॥ कीरीटवुं उले ~~देदी~~
पथमाना ॥ पदकमल मेखला ॥ ५२ ॥ यवामहस्तकि काळयाश ॥ कवळिका
लिंगदेह्यकोश ॥ अंगुठमा ~~म~~ एपु ~~रू~~ उ ~~अ~~ कर्तुनिकाटी
ला ॥ ५३ ॥ घउन्निचानिनाद ~~द~~ ~~पु~~ ~~रु~~ ~~धि~~ ~~अ~~ ~~च~~ ~~न~~ ~~व~~ ~~प्र~~ ~~न~~ ~~व~~ ~~वी~~ ~~ले~~ ~~दी~~
ति ॥ पाठोवाटीचालीलेसति ॥ धर्मराजालक्षुनि ॥ ५४ ॥ घालुनि
याळेवांगरा ॥ झयेस्यामिनुसांशकवर्ण ॥ ताडयेमिहारि
जगोचाआणो ॥ मोमिजाणोयमधर्मा ॥ ५५ ॥ नुं परमपनिवता ॥

आ

गुप्ता

अहो निनपाटविलेदुता। आगे यउनियान्ता। घेउनिय
जानसे। ६३। ॥ श्यासग्रहसरला। रुणानबंदसहचि
सरला। चत्वारपिउंसौपडिला। नासंस्कारिपवित्रे। ६४।
थारिहृल्लेकरुनिनमन। घेउनिजासीपतिचाधाए। ६५।
बुझाघोदोनसोडान। कोदोउंसंगपां। ६६। पुरुष
एटवि सोजथे। एजाहिनउनिटेवितये। वैधव्यनासे शब्द
वेभाले। ओस्करिछपाकुवा। ६७। पनिहुनिईधना
हिदुजा। ऐसाअसलनिधयेभासा। नरिचरनहना
वानुसा। वीछुनि गअरुनहोपुनिईमजकरन। ६८।

(7)

६

६

(४४)
धर्मराजापीत्रराजा॥ मोहेमानीमजआसजा॥ ज्यामातसे
लोनीपुरुशमास॥ आसचावीआपुळा॥ ५९॥ कोतकेधर्म
राजामूले॥ ससकवानावाचवींप्राणे॥ हेनीनकरनीयेकवचनःक
येकमजमागे॥ ६०॥ येरीमूलेजीदमचेन॥ स्वसुरमाझाचक्षुहीन
यातेदेईजेदीव्यनयन॥ श्रपवरनीस्वाभीया॥ ६१॥ दरीद्रदवडुनी
यादुरी॥ सर्वसंपराजशेवरी॥ तेरेडुनीप्रथमतरी॥ सनाथकरी
स्वाभीया॥ ६२॥ दीधन्नेमूलेनीबान्हेशमन॥ आतांजायवोपरतो
ना॥ चरलचान्नीदरीममन॥ पडीन्हेतुतेसबुमारे॥ ६३॥ येरीमू
लेगुसीयापाया॥ सोडुनिझोलापडलकाया॥ चनादेनेसिजयाव
या॥ मातेनेरेडपाकुवा॥ ६४॥ पुत्रमोहेदिनअथिली॥ ६५॥

(४)

जीले आसले येक पकि। तूरी हउ पाउ पजोनु साचिली। आनुग्रह
कराव्या। ७५। हासो निबाले किष्कहनी। वांचविले सेनबाले
जती। यावे गळे आवे उचिला। दुसरा वमज भागे। ७६।
॥ ७॥ वरी हाऊ निराड्यासी। सासु राकल अरु पवासी।
तस्कराड्य देउनियासी। सुख संतोशे देवांविं। ७७। दो
धले हल्ले कुपा मूर्ति। अतां पसे आडीया परी। परम
संतुष्ट तुसीया नती। मीजा लो सुसीळे। ७८। पुढ
मि विले विधम रिड्यासी। स्थाय नाहि भजविशेसी।
जतार जया गयाने सि। मृद्दिने ये

(8A)

चित्तान्धावे ॥ ७१ ॥ जीतां मे लीया वीया गनवे ॥ हे मे प्रमथी
जा करवि ॥ आसय सीवी नीले मसेन जीवे ॥ तरी छुपा
उपजो को ॥ ७२ ॥ सर्वा भिंती वास्तवेन ॥ औसा जासे छ ना संशये
भाव ॥ तुंची वरी निद्रु पाव ॥ ७३ ॥ सप्रव पाउले न संसंग
ति ॥ चालता आनुय हरी जस मी ॥ सपुत्र भची मुनी श्रु
वि ॥ दुष्ट कर्म परे झरो ॥ ७४ ॥ हा सो निवाले दया मती
सह्याना वाचा पुरती ॥ हे नो न करुनि माहा सती ॥
गती सरा वर मज्जा मावे ॥ ७५ ॥ मासा पीता उा स्थवी ॥ तया नीही

(४)
(७)
॥६॥

पुत्रसंतती ॥ ३ ॥ तपुत्रदेवोनीमनोअती ॥ पूर्वीयाचीनागवता ॥
दीधनेमृणोदररुसो ॥ आतांजोईसंतुष्टचित्ते ॥ तुसीयेनीगोवी
वीनेमाते ॥ पतीव्रतेसुपवीवि ॥ ८ ॥ दुर्गाइकाळीआन्नदान ॥ व्याधी
ग्रहस्ताचेसंरक्षणा ॥ केलेआसेनेनरीतुसेमनहोस्नेहा
मजळागी ॥ ९ ॥ गुरुसजनवीक्षुमरण ॥ हरीहरयेकरपी ॥
जाण ॥ यानीश्वयेआचमना ॥ वरीक्षुपालुमजहोई ॥ १० ॥ पु
उतीबोलेवरहोतरा ॥ बाचपीनमृणोनीजस्रतारा ॥ यावेगळा
चतुर्थविरा ॥ प्रागमातेमनेछा ॥ ११ ॥ वीनवीशवीवेकस्थता ॥ प्रस
न्नमुखेंवरवोपीता ॥ वीधवाशब्दमासीयामाया ॥ ननेमरेसेकरा
वे ॥ १२ ॥ शतपुत्रफलसंपूर्णदेसा ॥ करामासीउदरनतीका ॥

॥६॥

१४.

कृपा लुवा मुर नायका ॥ संतान सुख दाख वी ॥ ७७०० पीतया न्नामी ही
बलावर ॥ तैमचे माते शत कुमर ॥ द्यावया न्नामी मन मुदार ॥ ७७०१
पाहीजे ॥ ७७०२ पुत्रवती सोना ग्य वती ॥ जन्म सावीत्री मृग एवती ॥ मंगल
माहे स्वरी मृग एती ॥ उत्तय लोकी ते करी ॥ ७७०३ आनु जे वेवी एव ब्रह्मज्ञान
शरीर जे सेव प्राणे वी ए ॥ सन्यासी ज्ञानी हीन ॥ कानी धन गूर
स्ता ॥ ७७०४ फले की ए पाद पन्थ ॥ जे न सतां न या मुर मरीता ॥ ते
गनी सत ती वी ए वनीता ॥ हो न्या हीन समीची ॥ ७७०५ तराव या संसार अ
पां पती ॥ नो काये कर सं संगती ॥ बंध्या री पुर शार्थ च्या ही मुक्ती ॥
दासी होती सहो मे ॥ ७७०६ तु शीरो संगती कमी ले पंथा ॥ था ॥ तुज
सी के ली या आम्ह त बाहती ॥ आपुर्ण कामें मज सर्व था ॥ चाडी सी हि ध
उना ॥ ७७०७ दीधने मृगेश्वरी वारु देवो ॥ मस्तकी करी मान सनो

टाकुनी जारे आपुला ठावो ॥ वीळ बजाता गुहा जे ॥ ७९ ॥ ~~तु~~ तु
 जालो तुझी येगुणी ॥ बोल सीते सीदी से करणी ॥ आंघुत प्रायतु
 सीवाणी ॥ सस सोद के प्रवाहे ॥ ८० ॥ दुरीटा कुनी आनी रथका ॥ प
 वीत्र गो रथका ॥ मिला काका ॥ पुरुष पिडा नसि वेकीळ ॥ हे सजे न्ह
 दीसता ह ॥ ८१ ॥ यरि बाले करतो नमना ॥ स्थमूखे दोधले वैर
 मेजे दाना ॥ पुत्र प्राप्ति चाउ ॥ अक वला ॥ हत प्रकळ के पाहे
 जे ॥ ८२ ॥ वाज विना नव नर ॥ ८३ ॥ ऐसे बीळ सिवां वार ॥ तु
 वा स्थमूखे दोधला वर ॥ तो अन्यथान होय ॥ ८४ ॥ शत पुत्र
 पोपीळ मजळारी ॥ ते मा नसि कीवां पुरु रंगी ॥ वैधव्य
 दश माजी जगी ॥ अक्षय मये निदीनी ॥ ८५ ॥ सकट पडि

॥ ९ ॥

रं

रा

(10)

॥ ९ ॥

नृदिधर्मजजा॥ मृतेमाझीयेवचनीगोवीनेमज॥ अ॥ तं कुरुधीनेज॥
येचेअनुमानकारसा॥ १॥ देहीदेवतांपुलचिंद॥ सांठीममदिसमुद्याते
वीदद्यादीशेचार्द॥ वप्रदानबेनीला॥ ४॥ मृगमगमृगिरचैजआंतर
वरपांचवामगेबुमरी॥ अ॥ तं कुरुसिर्वापरी॥ तोदेरननुजनागी॥ धाकर
जोउनीवीनवीमुखा॥ नलीपवैधव्यानीपांख॥ तेसेंकरावेउत्तयलोकी॥ दरपा
हुंवाजगदीशा॥ धा॥ हतववोनीयमाथा॥ मृतेसंतुहनुसीयवजा॥
वांचवीननुआतिनी॥ तुजकारणेंकरका॥ धि॥ सखीवीमृतेवैलोभ
पती॥ मसवततेआयुशकीती॥ प्रगटबोलावेमजप्रती॥ अ॥ पुन्यास
खेंदया॥ ८॥ पाणीस्पशनीमाथा॥ मृतेनुमरुधिभरिदुहीनो
चीतासांजेनीयाचीता॥ स्पस्तआइंस्या॥ अ॥ ९॥ चारुगतेकरे

०

(11)

वरी॥ पुरषसंगपुत्रपौत्री॥ राज्यकरीवीहीताच्यारी॥ जापुन्यानगरीसज
 धर्मे॥ १०॥ न्योपावतीसमुहवैरी॥ आपुन्यादेसाआपुन्यानगरी॥ ~~चोली~~
 तंबलीकुमरी॥ राज्यकरीपतीसंगे॥ ११॥ प्राणअशापीलबलाही॥ जाउनी
 सरेआयुश्यगेही॥ सत्वीवीसवीयोतीपाही॥ ग्रहस्तामसंपादी॥ १२॥ वरद
 वदोनीदंडवाही॥ अदुःखजानतवदही॥ पतीवतसमधिनी॥ पतीज
 वलीपातनी॥ १३॥ ह्यतेस्यसितांचावाही॥ प्रसिटाकीमुखीद्याही॥ कान
 वलीउनीदंडा॥ कही॥ पलासिर॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥
 २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥
 ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥
 ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥
 ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥
 ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥
 ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥
 ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥
 ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

येक

१०५

१०५

118

गल ॥ मृलोकरी फलकद्वारा ॥ कलुनी सउ पवास ॥ १७ ॥ येरी मृलोर्या सुमा
सरा दोधे ॥ सीए ती दोहा च्या वायोगे ॥ तेथे जउ नीया दोधे ॥ फलार स्पीकत ॥ १८ ॥
बल ॥ वल्लागल उगरी ॥ ते प्रदा प्रकाह पिरती करी ॥ वाट शोधीत पुठारी ॥ आश्र
म मोई ~~व~~ चानीनी ॥ १९ ॥ देउ नोय रकंद पिर ॥ बहाउ चनीना प्रागेथर ॥
कंठक वारेनी सकुमार ॥ मृलस्थित चनीना ॥ २० ॥ देखे नीसा वीत्री चरूप ॥ सी
नेथे ध्वजुंजर सवे ॥ नमस्कार नी ॥ तपोपाप ॥ तव दृष्टि निपरी हर ॥ २१ ॥
स्नुशा ॥ पुत्र राही निवनी ॥ आश्रमी वृद्धि वउने दोही ॥ सरवेद चीत तुरमनी
शोक्करी ती जकोर्जे ॥ २२ ॥ त्यांचा कोन शोकरादि ॥ दर पेने पातले रावे भावद
मृलती आमुये आसीवदि ॥ कन्यालू करी ती तु मृते ॥ २३ ॥ सुवच्यता

रद जघीम्प ॥ अपस्त्रं न मुनीसतम ॥ दान्तिभरुषीवपवीत्रपरम ॥
 आस्थसीस्यरस्त्रे ॥ २४ ॥ ससुवन आणीसवीत्री ॥ आतां ईयेतान् आसा
 तारात्री ॥ अरीहरहीतपवीत्रनेत्री ॥ अवन्लेकिलनीधीरे ॥ २५ ॥ सचिन्ज
 न्नामगाविरी ॥ घोराहेकीलानामगजरी ॥ सपीपयेतां मातापतिरी ॥ उत्तय
 बांहीकवली ॥ २६ ॥ मस्तकसींचोनीपापवाती ॥ चोघेबेसलेयेकपती ॥
 परमांदनसंटेपोथी ॥ देखोनीडुहोदोघाते ॥ २७ ॥ पुत्रपाहेपीत्रुवदनं ॥ तव
 याहेरवेदीव्यनयनं ॥ मूलेअविदुसाजान्तिमुन्य ॥ २८ ॥ सप्तग्योदयदीम
 तोहे ॥ २९ ॥ वडीलवोपुनीआमृतप्रका ॥ शेशस्वीकारिगुणवेल्हाळा ॥
 तवसमयोप्रायः काळा ॥ होतजालास्यभावे ॥ ३० ॥ उदयायेतांदेवतरणी
 तववाद्यघोराहेकीलाथवली ॥ घेउनीसेनाआहोहीनी ॥ राज्यमत्री

(128)

पातले ॥ १ ॥ प्रजदेशीक मुख्य ॥ ये उनीसुवहरित नक्षत्र ॥ राजदर
नापातले दंड ॥ राजबुद्धीरक्षीते ॥ नीवटु नीवैरीयाच्योवळे ॥ प्रधाने
राज्यसधिले बळे ॥ जिन्यावया उतवेळे ॥ मध्यारणीपातले ॥ १ ॥ मा
गां बोन्नीसक वजन ॥ जरीजोरो चक्षु होन ॥ तरारजीबस्थापुनं ॥ रा
ज्यकरांतदक्षिणां ॥ २ ॥ जे साधितराष्ट्रपावाचक्षु ॥ कौरवकुलंतो जांधि
क्षु ॥ ते सादुमद्येन मुख्य ॥ ज्यसने स्थापणें ॥ ३ ॥ युवराजीससवान
मुख्यपटीदुमसेन ॥ राज्यकरताराक वजन ॥ तथातकीसुरबभोगु ॥ ४ ॥
जवळीपातलेनै मरकारा ॥ तवचक्षुराजेश्वरा ॥ देखोनीकरीतीजेका
रा ॥ मांहातंदेगजती ॥ ५ ॥ गजस्कंदीससवान ॥ कनकराद्यदुमसेना ॥
दीव्यवाजीमतकारा ॥ रथपदानीअसेख्य ॥ ६ ॥ सावीत्रीवाही

नीरतरसिबिकें ॥ आसंख्य दासीची शि। तवें ॥ छत्रचाम रे सुहस
 विं ॥ परीच्यारी काढाही ती ॥ ११ ॥ राजीस्थानी लास जु सुत ॥ ते तो पुत्र
 प्रसवला येक शत ॥ याग केले आसंख्यात ॥ आश्रमे धर्यादी ॥ १२ ॥
 कीती मानव लोक वारीला ॥ धर्म परलोक वश्य केला ॥ सावीत्रीच्या पुत्र
 तरला ॥ सव्यवान यारीती ॥ १३ ॥ दश नो आश्रय पती पातला ॥ शत पुत्र
 तो ही दोघाला ॥ यापरी सावीत्री यावला ॥ जंय कुली उद्धार ॥ १४ ॥ ज्या
 नृवीस मानते सुठाहा ॥ तारीती जानी दोही कुला ॥ ते सौंदोपदाची बाला
 हे दोपदी जाणपां ॥ १५ ॥ पराश उनीतु वुळे ॥ राज्यापावला सीधका कें
 ऐसें बोलेना पाणीक मळे ॥ साही मोळे स्पशींनी ॥ १६ ॥ कथा सा
 गोनी धर्म राजसी ॥ स्वाध्यास गेला दीधयिनी ॥ चरीत्र ऐकती धासी

(1300)

दीधितुमहातसो ॥ ४७ ॥ सावीत्रीचे महास्थान ॥ श्रवण करीती पवीत्रज
न ॥ धिर्मरिजिया लगुन ॥ सुप्रसन्न सर्वदा ॥ ४८ ॥ द्रपेने पत्नी वाचुसदनो
ईच्छी पुरवीमन कामना ॥ ऐसें व्यसाची यावचना ॥ श्रोती प्रमाणे करवें
॥ ४९ ॥ मुक्तेश्वराची सुटा छवचने ॥ परमाच्यं पक्षाची सुमने ॥ ते द्यवे च
काची मिने ॥ योग्य न देती परी मरुता ॥ ५० ॥ ईती भारते वनपर्वली ॥ पुढा
वुं उल्लासी हरली ॥ कथितवर्त्तन सखानी ॥ श्रवण केने पाहीजे ॥ ५१ ॥
ईती माहाभारते वनपर्वली सावीत्रीच्या स्थानो शोडशोऽध्यायः पसंग ॥

१६ ॥ १६ ॥





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com